

## पद १७९

(राग: परज - ताल: धुमाळी)

बुतों की महफिल में अपना माशूक नजर से देखा मगर न समझा ।  
होके परवाना जल गया दिल, जो उसको नूरे खुदा ही समझा ।  
या पाक आइना मस्तगुल हो, या चांद बदलीमें रुख हो यारब ।  
ये सोच बोसा जो लेके देखा, तो सचही आबे हयात समझा ॥१॥  
ये खुरश खुरशीद या फूल नरगिस या जोडा माहे या कान गौहर ।  
हे सोच मिशगां को खूब देखा, तो सच ही तीरे हदफ ही  
समझा ॥२॥ ये नूर बिजली या हो सितारा या होवे रिंदोकी जाय  
मसजिद् । या आशकों की ये हुस्न नीयत या दीन दुनियाका फलही

देखा ॥३॥ जो उसके नाजोअदा को देखा खुदा की कुदरत भूल  
रही है । जो उसके नाखून को खूब देखा तो सचही माहे हिलाल  
समझा ॥४॥ मैं इस गजल को हदीस समझा । मैं उसका मिलना  
मेराज समझा ॥५॥ जो रमज पाया सो हमवस्ल मगर हो कामिल  
मुरीद मुरशद । ये बंदा मानिक ने खूब समझा । मगर न दुनिया में  
कोई समझा ॥६॥